ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

जैसलमेर के सरोवर में पर्यटन की एक झलक
A Glimpse of Tourism In The Lake of Jaisalmer

Paper Submission: 15/12/2021, Date of Acceptance: 21/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

धनराज
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय ,जोधपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान के पश्चिम में स्थित ''थार के मरूस्थल'' का एक महत्वपूर्ण शहर ''जैसलमेर'' अपनी सांस्कृतिक विविधता तथा अपने गौरवशाली इतिहास के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं । पर्यटन की दृष्टि से जैसलमेर का विशेष महत्व हैं यहॉ हर वर्ष बड़ी संख्या में देश-विदेश से पर्यटक आते हैं। यहाँ त्रिकुट पहाड़ी पर बना जैसलमेर दुर्ग पर्यटको के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र हैं। यह दुर्ग युनेस्को द्वारा विश्व विरासत सूची में भी शामिल किया गया हैं ।जैसलमेर के लिए एक दौहा प्रसिद्ध हैं ।

''धोड़ा कीजे काठ का, पिण्ड कीजे पाषाण ।
बख्तर कीजे लोह का, तब देखो जैसाण ॥

अर्थात पत्थर के पैर व लोहे के शरीर तथा काठ के धोड़े पर सवार होकर ही जैसलमेर पहुँचा जा सकता हैं । जैसलमेर के सांस्कृतिक इतिहास में यहाँ की स्थापत्यकला का विशेष महत्व रहा हैं । इस क्षैत्र के स्थापत्य की अभिव्यक्ति यहॉ के किलों, गढ़ियो, राजभवनो, मंदिरो, हवेलियो, जलाशयो, छतरियो व जनसाधारण के प्रयोग में लाये जाने वाले मकानो आदि से होती हैं । यहाँ विषम भौगोलिक स्थिति तथा मरूस्थल के विस्तार के कारण इस क्षैत्र में जल का सदा अभाव रहा हैं । मध्यकाल में यादव कुल के भाटी शासको के शासनकाल में यहाँ तालाब, झील, नाडी, बेरी, कुएँ, कुण्ड, कुंई आदि विभिन्न जलाशयों का निर्माण करवाया गया। जो प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपम हैं ।

इन जलाशयों के समीप ही यहाँ की संस्कृति का विकास हुआ हैं । अतः यह जल स्त्रोत विभिन्न मानवीय क्रियाकलापों एवं जीव-जगत की अठखेलियों का प्रमाण रहे हैं । इन मध्यकालीन जल स्त्रोतो ने यहाँ के रीति-रिवाज, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, भाषा एवं धार्मिक स्थिति आदि को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित किया हैं। जैसलमेर राज्य में परम्परागत जल स्त्रोतो का विशेष महत्व हैं। आज भी लोग इन परम्परागत जल स्त्रोतो से अपनी पेयजल सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।
इन जलाशयों के समीप बने मंदिर, छतरियाँ, परसाले (धर्मशालाएँ), कुण्ड, बांध, महल, मठ आदि स्थापत्य का बेजोड़ नमुना प्रस्तुत करते हैं। आज भी यहाँ बड़ी संख्या में देश-विदेश से पर्यटक इन जलाशयो के देखने जैसलमेर आते हैं ।

Jaisalmer, an important city in the "Thar Desert" located in the west of Rajasthan, is famous all over the world for its cultural diversity and its glorious history. Jaisalmer has special importance from the point of view of tourism, where every year a large number of tourists come from all over the country and abroad. Here Jaisalmer fort built on Trikut hill is a major center of tourist attraction. This fort has also been included in the World Heritage List by UNESCO. Jaisalmer is famous for a doha.

That is, Jaisalmer can be reached only by riding on stone feet and iron body and wooden horse. The architecture of Jaisalmer has a special importance in the cultural history. The architecture of this area is expressed by the forts, bastions, palaces, temples, havelis, reservoirs, umbrellas and houses used by the general public. There has always been a shortage of water in this region due to the heterogeneous geographical location and the expansion of the desert. In the medieval period, during the reign of Bhati rulers of Yadav clan, various reservoirs like pond, lake, nadi, beri, well, kund, well etc. were constructed here. Which are unique from the point of view of natural beauty.

The culture here has developed near these reservoirs. Therefore, this water source has been the evidence of various human activities and the gimmicks of the life-world. These medieval water sources have directly and indirectly influenced the customs, tradition, food, lifestyle, language and religious status etc. Traditional water sources have special importance in the state of Jaisalmer. Even today people fulfill their drinking water needs from these traditional water sources.

Temples, chhatris, parasalas (dharamshalas), kunds, dams, palaces, monasteries etc. built near these reservoirs present an unmatched specimen of architecture. Even today, a large number of tourists from all over the country and abroad come to Jaisalmer to see these reservoirs.

मुख्य शब्द Keywords

मरूस्थल, भाटी राजवंश, परम्परागत जल स्त्रोत, सरोवर, बगेची, बाग, कुण्ड, बाव, स्थापत्य कला, शिल्प कला, छतरियाँ, परसालें, पोल, मानवीय गतिविधियाँ आदि।
Desert, Bhati dynasty, traditional water sources, lakes, gardens, gardens, ponds, waters, architecture, crafts, umbrellas, parasols, poles, human activities etc.

प्रस्तावना

भारत के सुदूर पश्चिम में स्थित विशल ''थार के मरूस्थल'' से धिरा राज्य जैसलमेर अपने वीरोचित कार्यो के लिए भारत वर्ष मे प्रसिद्ध रहा है। यहाँ चन्द्रवंशी भाटी राजपूतो का शासन रहा हैं। भाटी शसक अपना संबंध श्रीकृष्ण के यदुवंशी से मानते हैं। जो ''महाभारतकाल'' में मथुरा के आस-पास के क्षैत्रों में शासन करते थें । किन्तु कालान्तर में कुछ यदुवंशी क्षत्रियों ने अपना राज्य पंजाब व सिंध क्षैत्रों में स्थापित किया किन्तु उन क्षैत्रो में हुए विदेशी आक्रमणों के कारण इसी यदुवंशी क्षत्रिय शाखा के ''भटी्य'' नामक शासक ने मरूभूमि में आकर अपना नया राज्य स्थापित किया तथा इस क्षैत्र में ''भटनेर दुर्ग'' का निर्माण करवाया । इसी भट्यि शासक से आगे चलकर यह वंश ''भाटी'' कहलाया। जैसलमेर राज्य की स्थापना रावल जैसल द्वारा की गई थी। रावल जैसल ने ही त्रिकुट पहाड़ी पर सन् 1155 ईं. में जैसलमेर दुर्ग का निर्माण कर जैसलमेर नगर बसाया। रावल जैसल ने अपनी राजधानी लोद्रवा से स्थानान्तरित कर जैसलमेर को अपनी नई राजधानी बनाया।

स्थिति एवं विस्तार

जैसलमेर राज्य 20^0-01' से 20^0-02' उ. अक्षांश व 69^0-29' से 72^0-20' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित हैं। जैसलमेर क्षैत्र का सम्पूर्ण भाग रेतीला व पथरीला होने के कारण ग्रीष्म काल में यहाँ तापमान अधिक पाया जाता है ।
मई व जून महीनों में इस क्षैत्र का तापमान $40^0.50^0$ सेन्टीग्रेड हो जाता हैं तथा शीतकाल में $12^0.16^0$ सेन्टीग्रेड तक पहुच जाता हैं। इस क्षैत्र में वार्षिक वर्षा का औसत 25cm से भी कम हैं। यह क्षैत्र भौगोलिक दृष्टि से शुष्क व निर्जन था । किन्तु कालान्तर में यहाँ मानवीय क्रियाकलापों ने इस क्षैत्र के महत्व में वृद्धि की यह क्षैत्र भौगोलिक विषमता से युक्त था। जहाँ वनस्पति, जल, उपजाऊ मृदा आदि की कमी दिखाई देती हैं । जैसलमेर राज्य में जल की कमी को देखते हुए यहाँ के शासकों द्वारा विभिन्न जलाशयों, कुण्ड, कुओं, तालाबों आदि का निर्माण करवाया गया। इन जलाशयों के समीप ही यहाँ की संस्कृति का विकास हुआ। अतः यह जल स्त्रोत विभिन्न मानवीय क्रियाकलापों एवं जीव जगत की अठखेलियों का प्रमाण रहें। इन मध्यकालीन जल स्त्रोतो ने यहाँ के रीति-रिवाज, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, भाषा एवं धार्मिक स्थिति आदि को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित किया हैं। आज भी जैसलमेर राज्य में परम्परागत जल स्त्रोंतो का विशेष महत्व हैं । आज भी लोग इन परम्परागत जल स्त्रोतो से अपनी पेयजल सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं ।

जैसलमेर के प्रमुख जलाशय

गढसीसर, अमरसागर, जैतसर (जैतबंध), अनुपबाव

गढसीसर

गढसीसर झाील जैसलमेर दुर्ग से पूर्व दिशा में लगभग 2 कि.मी. दूर
पोकरण-बाड़मेर मार्ग पर स्थित हैं। इस झील का निर्माण जैसलमेर के महारावल धड़सी सिंह (धटसिंह) द्वारा करवाया गया। रावल-घड़सी रावल मूलराज के भाई रत्नसिंह का पुत्र था। 14 वीं सदी में महारावल धड़सी ने इस सरोवर का जीर्णोद्वारा करवाया था। ऐसा कहा जाता हैं कि वि.सं. 1418 में इस सरोवर के पुनःनिर्माण के समय जसहड भाटी आसकरण ने पीछे से धात कर महारावल घडसी का सिर धड़ से अलग कर दिया था तथा अपने प्रिय महारावल धडसी के इस बलिदान को चिर स्मृति बनाने के लिए इस सरोवर का नाम उनके नाम पर ''गढ़सीसर'' रखा गया। इस सरोवर के पूर्व में स्थित लेख से यह पता चलता हैं कि इस सरावेर का पुनः विस्तार जैतसिंह ने करवाया था। प्राचीन समय में यह सरोवर नगरवासियों के लिए एकमात्र जल का स्त्रोत था। इस सरोवर में वर्षा के दिनों में पहाड़ों का पानी बहकर इस सरोवर में आता था। यह सरोवर एक बार पूरा भर जाने पर नगरवासियों के लिए एक से डेढ वर्ष तक के लिए इसका पानी प्र्याप्त होता था ।
गढसीसर के समीप महारावल घडसी सिंह, भीम , मनोहर एवं गजसिंह व उनकी पत्नी रूपकंवर आदि की छतरियॅा बनी हुई हैं । गढसीसर के मुख्य द्वार पर बनी ''टीलो की पोल'' का निर्माण ''टीलो'' नामक वेश्या ने महारावल शालीवाहन के शासनकाल में करवाया था। इसी पोल पर ''टीलो'' द्वारा सत्यनारायण भगवान का मंदिर भी बनवाया गया जो यहॉ की धार्मिक आस्था का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। गढसीसर झील के समीप कई सम्प्रदायों की बगेचियँा बनी हुई हैं जिनमें विभिन्न धार्मिक अवसरों पर गोठो का आयोजन होता हैं इन बगेचियों में मंदिर तथा विश्रामगृह के लिए परसाले (धर्मशालाएँ) भी बनी हुई हैं। इनमें शाकद्वीपीय ब्राहम्णों की बगेची, वृतेसरियों की बगेची, इणतरामजी की बगेची, पुरोहितो की बगेची, व्यास जी की बगेची आदि सभी प्रमुख बगेचियॅा यहॉ के जनजीवन का प्रमुख केन्द्र बन गई थी। गढसीसर के समीप बनी ये परसाले जैसलमेर राज्य की स्थापत्यकला व उसके वैभव को प्रकट करती हैं। यहाँ की मुख्य परसालो में द्वारके की परसाले, पुरोहितो की बगेची की परसाले, व्यास जी की बगेची की परसाले आदि मुख्य हैं ये परसाले न केवल धार्मिक रूप से जबकि लोकहित की दृष्टि से आज भी महत्वपूर्ण बनी हुई हैं ।

गढसीसर सरोवर के समीप बनी बगेची, परसाले, मंदिर, पोल आदि यहाँ के जनजीवन का प्रमुख केन्द्र माने जाते हैं । ये सभी स्थापत्यकला के नमूने जैसलमेर राज्य के सांस्कृतिक वैभव की एक नई झलक प्रस्तुत करते हैं ।

(गढसीसर झील,जैसलमेर)

अमरसागर

अमरसागर सरोवर का निर्माण महारावल सबल सिंह के द्वितीय पुत्र अमर सिंह ने करवाया। यह झील जैसलमेर से लगभग 5 कि.मी दूर लोद्रवा मार्ग पर स्थित हैं जिसका निर्माण महारावल अमरसिंह ने वि.सं. 1748 की मिगसर बदी एकम् को करवाया था। जैसलमेर से लगभग 7 कि.मी. पश्चिम दिशा में "अमर सागर महल" भी स्थित हैं। इस झील के दोनो और कई बावड़ीयाँ, मंदिर, बाग इत्यादि का भी निर्माण करवाया गया था। बांध के समीप स्थित गणेश की मूर्ति के नीचे मिले लेख के अनुसार अमर सागर का निर्माण कार्य 1745 ई. से प्रारम्भ हुआ तथा बांध के ऊपर अमरेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाकर 1751 ई. में इसकी प्रतिष्ठा करवाई गई थी। अमर सागर के समीप महारानी अनुपदे के नाम पर वि.सं. 1749 की मिगसर सूदी दशम् को "अनुपबाव नामक सुरम्य पगबाग" का निर्माण करवाया गया था। अनुपबाव के सामने छतरी का निर्माण महारावल जसवन्त सिंह ने अपनी माता अनुपदे की स्मृति में स्वर्गलोक सिधारने पर वि.सं. 1759 मे करवाया था। इस सागर के निमित्त महारावल अमरसिंह ने वि.सं. 1756 में एक खेत माडेत नामक सोनारो का उधार लिया था तथा इस खेत से होने वाली आय सरोवर के रखरखाव एवं जीणोद्वार हेतु खर्च करने का निर्णय लिया गया। अमर सागर सरोवर में वेश्याओं, महारावलो की पासवानो तथा नगर वासियों की तरफ से भी पगबावे बनी हुई हैं। इसके ऊपर सुन्दर छतरिया एवं महल बने हुए हैं। गर्मी के दिनों में लोग यहाँ विश्राम करते है। अमर सागर पर एक सुन्दर घाट भी बना हुआ हैं। इन घाटों पर बने बंगले, घाटो पर बने हाथी, घोड़े आदि तत्कालीन शिल्प-कला का बेजोड़ नमुना पेश करते हैं

।

(अमरसागर झील,जैसलमेर)

अमर सागर पर गंगा सप्तमी के दिन एक मेला भरता हैं। अमरसागर पर महेश्वरियों, ओसवालो आदि की बगेचियाँ भी बनी हुई हैं। साथ ही भव्य जैन मंदिर भी बने हुए हैं। सरोवर के मध्य बना पटवा परिवार का जैन मंदिर कला का बेजोड़ नमूना हैं। इस मंदिर के झरोखे, जालियों, हाथियों, अश्वों तथा फूल-पत्तियों की कला दर्शनीय हैं। जैसलमेर के पत्थर पर उत्कीर्ण बारीक नक्काशी का कार्य शिल्पकला का अनूठा उदाहरण पेश

करता हैं। अमर सागर के पास एक सुन्दर बाग है, जहाँ आम, जामुन, नींबू, अंगूर, आदि वृक्षो के अलावा विभिन्न प्रकार के फूलो जैसे गुलाब, चमेली, मोगरा आदि के पौधे भी लगे हुए हैं।

जैतसर (जैतबंध)

जैसलमेर से 5 कि.मी दूर रामगढ़ रोड़ पर महारावल जैतसिंह द्वितीय के समय दो पहाड़ियों के बीच एक विशाल बांध का निर्माण किया गया। यह बांध जैतबंध के नाम से जाना जाता हैं। जैसलमेर में मध्कालीन जल संरक्षण का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण हमें जैतबंध के रूप में मिलता हैं। इस बंध क्षैत्र में फलो का एक बाग भी लगाया गया हैं जिसे "बड़ा बाग" कहते हैं। रावल जैतसिंह द्वारा प्रारम्भ किए गए जैतबंध कार्य को उनके पुत्र रावल लूणकरण ने अपने शासनकाल में पूर्ण करवाया। यह जैतबंध लगभग 1200 फीट लम्बा व 300 फीट चैड़ा तथा 100 से 150 फीट की ऊँचाई पर बना यह बंध "मध्यकालीन भारतीय बंध तकनीक" का सबसे पुराना जीवित उदाहरण हैं। इस जैतबंध के समीप भाटी शासकों की छतरियॅा बनी हुई हैं। यही पर महारावलो का दाह-संस्कार होता था। 16 वीं सदी में निर्मित यह छतरियाँ स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमुना प्रस्तुत करती हैं जिससे जैसलमेर राज्य का सांस्कृतिक वैभव दृष्टिगोचर होता हैं। जैतबंध के समीप स्थित पहाड़ी पर बनी छतरियों को "सतियों का मंडप" कहा जाता है जो संभवत रानियों के दाह-संस्कार से सम्बन्धित रहा हैं। इस जैतबंध के समीप कई कुण्ड, बांध, बगीचे, छतरियाँ आदि निर्मित हैं इनका निर्माण जैसलमेर के भाटी शासकों द्वारा करवाया गया। जो आज भी आम जनजीवन की अठखेलीयों का प्रमुख केन्द्र बने हुए हैं। जहाँ बड़ी संख्या में आज भी विदेशी पर्यटक इन स्थलो को देखने आते हैं ।

अध्धयन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य इन ऐतिहासिक महत्व के जलाशयों व इसकी निर्माण कला, इतिहास व सरोवर के समीप बने स्थापत्यकला के विभिन्न प्रतीको के महत्व को उजागर करना है। जैसलमेर के जलाशयों का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व एवं पर्यटन में उपयोगिता।

निष्कर्ष

राजस्थान के मरूस्थलीय क्षैत्र की जैसलमेर रियासत जहाँ दूर-दूर तक मरूस्थल का विस्तार है। इस रियासत में मध्यकाल में निर्मित जल स्त्रोतों ने यहाँ के जन-जीवन को प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित किया है। यहाँ विशाल भू-भाग में फैले रेत के टीलो, धरातलीय भाग की समुद्रतल की उँचाई अधिक होने एवं वनस्पति के अभाव इत्यादि के कारण यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 25से.मी से भी कम रहता है। अतः यहाँ के जन जीवन को जल संकट का सामना करना पड़ता है। किन्तु इस विषम परिस्थिति में भी जैसलमेर रियासत में मध्यकाल में बने गढसीसर, अमरसागर, जैतसर आदि सरोवर जल प्रबन्धन की उत्कृष्ट तकनीकी व्यवस्था व इन सरोवर के समीप बने बाग, बगीचे, छतरियाँ, परसालें आदि स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष महत्व के है। वर्तमान में इन जलाशयों व इनके समीप बने विभिन्न स्थापत्यकला के विभिन्न स्वरूपों को देखने बड़ी संख्या में पर्यटक जैसलमेर आते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वाल्टर, सी.के.एम - "गजेटियर ऑफ मारवाड़, मालानी एण्ड जैसलमेर" सन् 1877 पृ.सं. 12*
2. *लक्ष्मीचंद, "तवारीखे जैसलमेर", पृ.सं.-28,212*
3. *अरस्कीन, के.डी. - "राजपूताना गजेटियर भाग-3" 1905 पृ.सं.-27*
4. *नन्द किशोर शर्मा, "जैसलमेर का परिचय" पृ.सं.- 175-176*
5. *मयंक, मांगीलाल, "जोधपुर राज्य का इतिहास" पृ.-19*
6. *मेहता, नथमल- "वही" पृ.सं. 29*
7. *नाहर, पूर्णचन्द, "जैसलमेर लेख संग्रह भाग-3" पृ.सं.-2*
8. *अनुपम मिश्र, " राजस्थान की रजत बूँदे" पृ.सं.- 7-19*
9. *के.के.सहगल, "राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स,जैसलमेर" पृ.सं.- 223*
10. *डॉ. हरिवल्लभ माहेश्वरी "जैसल", "मध्यकालीन जैसलमेर का इतिहास" पृ.सं.- 1-20, 41-51*
11. *टॉड, जेम्स, एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग-2 पृ.सं.- 219*